P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-5* ISSUE-6* September - 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

मणिपुर में उग्रवाद एवं छोटे हथियारों का प्रसार

Extremism and Small Arms Proliferation In Manipur

Paper Submission: 15/09/2020, Date of Acceptance: 25/09/2020, Date of Publication: 27/09/2020

कमलेश चन्द्र पाण्डेय
शोधार्थी
पोस्ट डॉक्टोरल फैलो,
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली, भारत

आर0 सी0 एस0 कुँवर
शोध निर्देशक
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
रक्षा, स्त्रॉतेजिक एवं भू
राजनीतिक अध्ययन विभाग,
बिड़ला परिसर,
हे0नं0ब0ग0केन्द्रीय
विश्वविद्यालय, श्रीनगर
गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

21 जनवरी 1972 को मणिपुर पूर्ण राज्य बना।वर्तमान में मणिपुर में 16 जिले हैं। भौगोलिक दृष्टि से मणिपुर के उत्तर में नागालैंड, उत्तर–पूर्व में असम, दक्षिण में मिजोरम, पूर्व में म्यांमार और पश्चिम में असम का कछार जिला आता है। सम्पूर्ण उत्तर–पूर्व भारत सात राज्यों असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, त्रिपुरा भारत के 7.6 प्रतिशत भूमि क्षेत्र और भारत की कुल आबादी का 3.6 प्रतिशत शामिल है। सन् 1940 के दशक के उत्तरार्ध से सशस्त्र संघर्ष का सामना कर रहा है। स्वतंत्रता के लिए और उत्तर पूर्व में नए राज्यों के लिए विभिन्न जातीय समूहों द्वारा हिंसक और मुखर मांगें पिछले पांच दशकों में हुई हैं। मणिपुर राज्य में बांग्लादेश से आए घुसपैठियों की वजह से अनेक समस्याएं उत्पन्न हुई। मणिपुर में आदिवासी नगा–कूकी तथा मैती के बीच काफी पुराने विवाद हैं। यहॉ उग्रवाद, जातीय मुद्दे, आपराधिक गतिविधियां और नशीले पदार्थ की समस्या भी गम्भीर है। उग्रवाद के कारण मणिपुर में छोटे हथियारों का प्रसार भी हुआ है। सन् 1978 में एन0बी0 शेखर, सुधीर और सुमेंद्र नामक 3 युवकों के नेतृत्व में मणिपुर में हजारों युवक बागियों की कतारों में शामिल हुए थे। बाद में इन तीनों के बगावत की पलट से हट जाने के बाद भी मणिपुर में उग्रवाद की स्थितियां बनी रही। सेना और असम राइफल्स सहित अन्य सुरक्षा बल राज्य से उग्रवाद की समस्या को समाप्त करने के लिए पूर्ण प्रयास कर रहे हैं। गृह मंत्रालय द्वारा भ्रमित युवाओं और उग्रवादियों को, जो उग्रवाद में भटक गए हैं, उनके आत्मसमर्पण, सहपुनर्वास संबंधी योजना को कार्यान्वित किया जा रहा है।

Manipur became a full-fledged state on 21 January 1972. Currently, Manipur has 16 districts. Geographically, Nagaland comes to the north of Manipur, Assam in the north-east, Mizoram in the south, Myanmar in the east and Cachar district of Assam in the west. The entire North-East of India comprises seven states of Assam, Arunachal Pradesh, Manipur, Meghalaya, Mizoram, Nagaland, Tripura covering 7.6% of the land area of India and 3.6% of the total population of India. Has been facing armed conflict since the late 1940s. Violent and outspoken demands by various ethnic groups for independence and for new states in the North East have occurred over the past five decades. Many problems arose due to intruders from Bangladesh in the state of Manipur. There are longstanding disputes between the tribal Naga-Kuki and Maiti in Manipur. Here, extremism, caste issues, criminal activities and narcotics problem are also serious. Extremism has also led to the proliferation of small arms in Manipur. Thousands of young men joined the queues in Manipur in 1978 under the leadership of 3 youths named NB Shekhar, Sudhir and Sumendra. Later, despite the withdrawal of the rebellion by these three, the conditions of insurgency remained in Manipur. The Army and other security forces, including the Assam Rifles, are making full efforts to eliminate insurgency from the state. The Ministry of Home Affairs is implementing the scheme of surrender, co-rehabilitation of disillusioned youths and militants who have wandered into extremism.

मुख्य शब्द : मणिपुर, उग्रवाद, हथियार, प्रसार।
Manipur, extremism, weapons, proliferation.

प्रस्तावना

मणिपुर का शाब्दिक अर्थ 'मणि की धरती' या 'रत्नों की भूमि' है। मणिपुर में कई संस्कृतियों के लोग रहते हैं जैसे कुकी, नागा, पांगल और मिज़ो,

जो कई भाषाएं बोलते हैं। मणिपुर में रहने वालों को तीन प्रमुख जनजातियों में बांटा जा सकता है जो कि मेइती, घाटी में रहने वाले और पहाड़ों में रहने वाले प्रमुख आदिवासी हैं। पहाड़ों में रहने वाली जनजातियों को दो और उप-जनजातियों में बांटा जा सकता है जो कि कुकी–चिन और नागा हैं।[1] मणिपुर सन् 1891 में एक रियासत के रूप में ब्रिटिश सरकार के अधीन आया। मणिपुर गठन अधिनियम 1947 के अधीन यहां एक लोकतंत्रात्मक सरकार की स्थापना हुई जिसका कार्यकारी प्रमुख महाराजा थे और वयस्क मताधिकार के आधार पर निर्मित एक विधान सभा स्थापित की गई। उसके बाद शासन चीफ कमिश्नर के प्रांत के रूप में चलता रहा और 26 जनवरी 1950 को भारत के संविधान के अधीन इसे राज्य बना दिया गया। वर्ष 1950–51 में यहॉ परामर्शदायी कोटी की लोकप्रिय सरकार स्थापित की गई। सन् 1957 में उसे हटाकर उसके स्थान पर एक क्षेत्रीय परिषद बनाई गई, जिसमें 30 निर्वाचित और 20 नामजद सदस्य थे। उसके बाद सन् 1963 में 30 निर्वाचित और तीन नामजद सदस्य वाली एक विधान सभा बनाई गई। दिसंबर 1969 में इसे चीफ कमिश्नर के प्रांत के स्थान पर उपराज्यपाल का प्रांत बना दिया गया। 21 जनवरी 1972 को मणिपुर पूर्ण राज्य बना। सन् 1983 में मणिपुर को 09 जिलों क्रमशः पूर्वी इंफाल, पश्चिमी इंफाल, विष्णुपुर, थौबल, उखरुल, सेनापति, तमेंगलांग, चूड़ाचांदपुर और चंदेल में गठित किया गया।वर्तमान में मणिपुर में 16 जिले हैं। भौगोलिक दृष्टि से मणिपुर के उत्तर में नागालैंड, उत्तर–पूर्व में असम, दक्षिण में मिजोरम, पूर्व में म्यांमार और पश्चिम में असम का कछार जिला आता है। मणिपुर का क्षेत्रफल 22,327 वर्ग किलोमीटर, जनसंख्या 25,70,390 है। मणिपुर की साक्षरता दर 79.85% है।[2]

सम्पूर्ण उत्तर–पूर्व भारत सात राज्यों असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, त्रिपुरा भारत के 7.6 प्रतिशत भूमि क्षेत्र और भारत की कुल आबादी का 3.6 प्रतिशत शामिल है। सन् 1940 के दशक के उत्तरार्ध से सशस्त्र संघर्ष का सामना कर रहा है। यह क्षेत्र लगभग 70 से अधिक प्रमुख जनसंख्या समूहों और उप–समूहों का घर है, यहॉ के निवासी लगभग 400 भाषाओं और बोलियों को बोलते हैं। भारत या दक्षिण एशिया के किसी अन्य खंड में इतने लंबे समय तक हिंसक संघर्ष नहीं हुआ, जिसने छुडौती के लिए विकास को रोक दिया। स्वतंत्रता के लिए और उत्तर पूर्व में नए राज्यों के लिए विभिन्न जातीय समूहों द्वारा हिंसक और मुखर मांगें पिछले पांच दशकों में हुई हैं। उग्रवाद की आग ने इस रणनीतिक क्षेत्र को पिछली आधी सदी या उससे अधिक समय तक घेरे रखा, जिससे यह दक्षिण एशिया के सबसे अशांत क्षेत्रों में से एक बन गया। चार

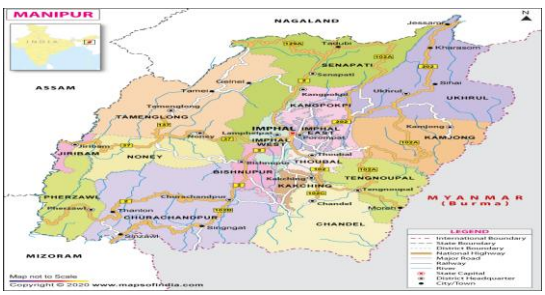

देशों (भूटान, बांग्लादेश, चीन और म्यांमार) से घिरे इस क्षेत्र का भू–राजनीतिक महत्व है।[3]

https://www.mapsofindia.com/maps/manipur

मणिपुर में उग्रवाद का उदय एवं प्रभाव

मणिपुर में सर्वप्रथम सन् 1953 में रिवॉल्यूशनरी नेशनलिस्ट पार्टी (RNP) अत्यधिक स्वायत्तता की आकांक्षा से अस्तित्व में आई पर इसकी मांगों को अनसुना करने पर यह सशस्त्र विप्लव के विचार से मणिपुर रिवॉल्यूशनरी पार्टी के रूप में बदल गई पर जनसमर्थन से रहित यह दल प्रभाव छोड़ने में असफल रहा। बाद में, यूनाइटेड नेशनल लिबरेशन फ्रंट, रिवॉल्यूशनरी गवर्नमेंट ऑफ मणिपुर जैसे समूह मतई स्टेट कमेटी जैसे अलगाववादी प्रवृत्ति के दल भी उभरे किंतु मणिपुर के परिदृश्य में पूर्व आर0जी0एम सदस्य एन विश्वेश्वर सिंह के नेतृत्व वाली पीपुल्स लिबरेशन आर्मी का उभरना तथा मणिपुर घाटी में सशस्त्र संघर्ष की शुरुआत उल्लेखनीय है।[4] सन् 1978 में एन0बी0 शेखर, सुधीर और सुमेंद्र नामक 3 युवकों के नेतृत्व में मणिपुर में हजारों युवक बागियों की कतारों में शामिल हुए थे। बाद में इन तीनों के बगावत की पलट से हट जाने के बाद भी मणिपुर में उग्रवाद की स्थितियां बनी रही। विगत वर्षों में हजारों विद्रोही मारे जा चुके हैं फिर भी आज तक हिंसा नहीं रुकी है। इसी आतंकी क्रियाकलाप के चलते इंफाल घाटी को (मेति समूह) अशांत क्षेत्र घोषित कर 1980 में अति विवादास्पद सशस्त्र सेना अधिनियम 1958 (Armed Forces Special Powers Act) के अंतर्गत ला दिया गया।[5] वर्ष 1992 में नागा–कुकी संघर्ष के बाद तो मणिपुर की विपल्व समस्या में नया अध्याय जुड़ गया। इधर यहां के मूल मीथी समुदाय, वृहत्तर नागालैंड की अवधारणानुसार मणिपुर के नागा क्षेत्रों को नागालैंड में मिलाए जाने का घनघोर विरोधी है।[6]

मणिपुर राज्य में बांग्लादेश से आए घुसपैठियों की वजह से अनेक समस्याएं उत्पन्न हुई। राजनेताओं द्वारा इस समस्या के समाधान हेतु कोई ठोस एवं प्रभावी कदम नहीं उठाया गया बल्कि वोट बैंक के लालच में उन्हें प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में संरक्षण एवं सहयोग प्रदान किया गया। कूकी–नागा संघर्ष का लाभ उठाते हुए बांग्लादेशी घुसपैठिए हथियारों की आपूर्ति एवं तस्करी में भी लिप्त हो गए। इनके सहयोग से वर्ष 1991 से इस्लामिक रिवोल्यूशनरी फ्रंट नामक मुस्लिम उग्रवादी संगठन काम कर रहा है जो आई0एस0आई0 के साथ मिलकर भारत विरोधी अभियान में जुटा हुआ है।[7] पूर्वोत्तर को शेष भारत से अलग करने के लिए असल में आई0एस0आई0 ने दो तरफा रणनीति अपना रखी है। एक ओर वह इस क्षेत्र के प्रमुख जनजातीय उग्रवादी संगठनों को मदद देकर उनके माध्यम से गड़बड़ी फैला रही है, तो वहीं दूसरी ओर उसने राज्य में बड़े पैमाने पर उपस्थित मुस्लिम बांग्लादेशी घुसपैठियों के बीच अनेक इस्लामी चरमपंथी गुट भी खड़े किये।[8]

मणिपुर के कारोबार का बड़ा हिस्सा बाहरी लोगों के हाथ में है। मूलनिवासी के प्रावधानों से ये भी आशंकित हैं। इनमें बड़ी आबादी बिहारियों की है। मणिपुर में आदिवासी नगा–कूकी तथा मैती के बीच काफी पुराने विवाद हैं। मीतई लोगों की जनसंख्या राज्य की कुल

आबादी का लगभग 65 फिसदी थी। जबकि मणिपुर में नगा और कूकी आदिवासियों की जनसंख्या लगभग 35 फिसदी थी। लेकिन जमीन के स्वामित्व में यह आंकड़ा बिल्कुल विपरीत है, आदिवासियों के पास अधिक भूमि है।[9]

मणिपुर में सशस्त्र विद्रोह के लिए बने कुछ प्रमुख संगठन

यूनाइटेड नेशनल लिबरेशन फ्रंट (यू0एन0 एल0 एफ0)

यह सक्रिय उग्रवादी संगठन सन् 1965 से मणिपुर में अस्तित्व में आया। पूर्व में इस संगठन के पास लगभग 150 से 200 तक उग्रवादी थे, जिनका प्रभाव क्षेत्र इंफाल घाटी तक सीमित था। इस संगठन का उद्देश्य मणिपुर की जनता के लिए संप्रभु एवं स्वतंत्र राष्ट्र दिलाना है। चंदा और जबरन वसूली इनकी आय का स्त्रोत है। पिस्तौल, स्टेनगन, एमपी20 राइफल जैसे छोटे हथियार और एन0एस0सी0एन तथा पी0एल0ए आदि उग्रवादी संगठनों के साथ इनके नजदीकी रिश्ते हैं।

पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पी0 एल0 ए0)

एन0 विश्वेश्वर सिंह के नेतृत्व में सन् 1978 में बने इस संगठन का प्रभाव क्षेत्र मणिपुर राज्य है। इस गुट का उद्देश्य मणिपुर को स्वतंत्र व संप्रभु राष्ट्र के निर्माण के लिए संघर्ष करना है, जो कि कम्युनिस्ट विचारधारा पर आधारित है। इस संगठन में लगभग 150 से 200 तक उग्रवादी थे। पी0एल0ए0 के महिला मोर्चा में महिला उग्रवादी भी हैं। इस संगठन की राजनीतिक शाखा का नाम रिवॉल्यूशनरी पीपुल्स फ्रंट है जिनकी तीन इकाइयां क्रमशः मणिपुर, म्यांमार एवं बंग्लादेश में सक्रीय हैं। इस उग्रवादी संगठन के सक्रीय क्षेत्र राज्य के इंफाल, बिशनपुर और थोउबल जिले हैं। उगाही के साथ ही इस संगठन को सिंगापुर व थाईलैंड से पैसा मिलता है। एके 47, एके 56, एम–20, एम–21, एम–22राइफलें, चीनी एल0एम0जी, पिस्तौल इस संगठन के प्रमुख हथियार हैं। एन0एस0सी0एन और प्रीपाक (पीपुल रिवोल्यूशनरी पार्टी ऑफ कांग्लीपाक), उल्फा आदि उग्रवादी गुटों से इन्हें मदद मिलती है।[10] 30 जुलाई 2020 को पी0एल0ए0 द्वारा म्यांमार से लगते चंदेल जिले में घात लगाकर एक आईडी ब्लास्ट किया गया जिसमें असम राइफल के 3 जवान मारे गए और 4 जख्मी हो गए।[11]

कुकी नेशनल आर्मी (के0एन0 ए0)

अपने आतंकवादी दबदबे वाले इस उग्रवादी संगठन की स्थापना 5 अगस्त 1987 को मणिपुर के मोरहे एवं आसपास के क्षेत्रों में हुई थी। जो कि कुकी नेशनल आर्गेनाइजेशन कि हथियारबंद शाखा है। इस उग्रवादी संगठन का उद्देश्य भारत और म्यांमार की कुकी बाहुल्य क्षेत्रों को मिलाकर एक कुकी होमलैण्ड बनाना है, जो भारतीय संविधान के दायरे में रहकर भारतीय भूभाग का हिस्सा हो। इस उग्रवादी संगठन के पास 500 सशस्त्र उग्रवादी हैं जिनके पास भी अत्याधुनिक हथियार मौजूद हैं। म्यांमार के कचिन इण्डिपेंडेंट्स आर्मी से इस उग्रवादी संगठन के मधुर रिश्ते हैं।[12]

कांग्लेई यवोल काना लूप (केवाईकेएल)

यह संगठन मणिपुर में सांस्कृतिक एकता के लिए बना था लेकिन यह कई उग्रवादी समूहों की मदद भी करता है।[13]

India - Terrorist, Insurgent and Extremist Groups
Insurgency North East
Manipur

Proscribed Terrorist/Extremist Groups	Active Terrorist/Insurgent Groups	Inactive Terrorist/Insurgent Groups	In Peace Talks/Ceasefire (Groups/Congrolamates

1. Kangleipak Communist Party (KCP) 2. United National Liberation Front (UNLF) 3. People's Liberation Army (PLA) 4. Kanglei Yawol Kanna Lup (KYKL) 5. People's Revolutionary Party of Kangleipak (PREPAK) 6. National Socialist Council of Nagaland - Khaplang (NSCN-K) 7. Manipur People's Liberation Front (MPLF)	1. Coordination Committee (CorCom) 2. Hmar People's Convention- Democracy (HPC-D) 3. National Socialist Council of Nagaland - Isak-Muivah (NSCN-IM) 4. People's United Liberation Front (PULF) 5. Zeliangrong United Front (ZUF) 6. Maoist Communist Party – Manipur (MCP-M) 7. Zomi Re-unification Organisation (ZRO) 8. Thadou People's Liberation Army (TPLA) 9. National Revolutionary Front of Manipur (NRFM) 10. Manipur Naga Revolutionary Front (MNRF) 11. Zomi Revolutionary Army (ZRA) 12. Kuki National Front (KNF) 13. Kuki National Liberation Front (KNLF)	1. Manipur Naga People's Front (MNPF) 2. Kuki Independent Army (KIA) 3. Zomi Revolutionary Front (ZRF) 4. United People's Party of Kangleipak (UPPK) 5. United Naga People's Council (UNPC) 6. United Kuki Liberation Front (UKLF) 7. Kuki Defence Force (KDF) 8. Komrem People's Army (KRPA) 9. Kuki International Force (KIF) 10. Islamic National Front (INF) 11. Manipur Komrem Revolutionary Front (MKRF) 12. United Socialist Revolutionary Army (USRA)	1. Kuki National Organisation (KNO) [11 militant groups] 2. United Revolutionary Front (URF)

Source: https://www.satp.org/terrorist-groups/india-insurgencynortheast-manipur

उग्रवाद के फलस्वरूप छोटे हथियारों का प्रसार एवं प्रभाव

सन् 1980 में शिलांग समझौते (1975) में भूमिगत नागा आंदोलन में विभाजन के बाद, NSCN पूर्वोत्तर में सबसे शक्तिशाली विद्रोही समूह के रूप में उभरा। इसने एके राइफल्स और रॉकेट प्रोपेल्ड ग्रेनेड सहित छोटे हथियारों का एक दुर्जेय शस्त्रागार एकत्र किया है। पिछले कुछ वर्षों में, यह दक्षिण–पूर्व एशिया के गुप्त हथियारों के बाजार में अपनी पहुंच के आधार पर इस क्षेत्र में छोटे हथियारों के प्रसार का प्रमुख वेक्टर बन गया है। न केवल गुप्त बाजार तक पहुंच, यह उस मार्ग को भी नियंत्रित करता है जिसके माध्यम से ऐसे हथियार उत्तर–पूर्व में तस्करी किए जाते हैं। इस तरह के हथियारों को तब थाईलैंड–म्यांमार सीमा के दक्षिण तट से दूर छोटे द्वीपों में तस्करी कर लाया जाता है। माना जाता है कि दक्षिण एशिया का रास्ता थाई तट से दूर रंगोंग द्वीपों में शुरू होता है, जहां से अंडमान सागर के माध्यम से कंट्राबैंड को भेजा जाता है और कॉक्स बाजार में उतारा जाता है। जहां से हथियारों को छोटे कैश में म्यांमार और उत्तर–पूर्व भारत के विभिन्न गंतव्यों तक ले जाया जाता है।[14] बिनालक्ष्मी नेप्राम के अनुसार हथियार संबंधी संघर्षों के कारण मणिपुर में पिछले पांच दशकों में 20,000 से अधिक लोग मारे गए हैं, उन्होंने कहा कि आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, 2008 में अकेले 400 से अधिक लोगों ने अपनी जान गंवाई थी। मणिपुर में मारे गए ज्यादातर लोग 19 से 42 साल की उम्र के युवा हैं और परिणामस्वरूप, मानपुर में हर साल औसतन 300 विधवाएं हो जाती थी।[15]

मणिपुर में उग्रवाद की रोकथाम के लिए सुरक्षा बलों द्वारा सैन्य कार्यवाहियां की जाती रही हैं। उग्रवाद के दमन के लिए म्यांमार पर भारत की सेना द्वारा पहली सर्जिकल स्ट्राइक साल 1995 में की गई जो कि अब तक भारत की सबसे बड़ी सर्जकिल स्ट्राइक थी। उस वक्त सेना ने म्यांमार में घुस कर उग्रवादियों के कैम्प बर्बाद करने के लिए ऑपरेशन गोल्डन बर्ड चलाया था। ऑपरेशन गोल्डन बर्ड में कुल 40 उग्रवादी मारे गये। इसे कुछ लोग सर्च एंड हंट ऑपरेशन नाम से भी जानते हैं।[16] एक अन्य आंकलन के अनुसार ऑपरेशन गोल्डन बर्ड के तहत 38 विद्रोहियों को मारा, 118 को पकड़ा और बड़ी मात्रा में गोला बारूद के साथ 100 से अधिक हथियार अभिग्रहित किए गए। कॉक्स बाजार के बंगलादेश तटीय शहर के दक्षिण में स्थित व्याकांग बीच इन हथियारों का पसंदीदा लैंडिंग स्थल था, लेकिन कॉक्स बाज़ार जिले में कम से कम छह अन्य बिंदुओं का इस्तेमाल किया गया था। एनएससीएन, मणिपुरी समूह, उल्फा और एनडीएफबी के छापामार तब इन्हें उठाकर तीन जगहों (क) चटगांव पहाड़ी इलाकों– दक्षिण मिजोरम–पूर्व मणिपुर मार्ग, (ख) चटगाँव पहाड़ी मार्ग–त्रिपुरा–पश्चिम मिज़ोरम–पश्चिम मणिपुर मार्ग (ग) चटगाँव– सिलहट –मेघालय– असम मार्ग। पिछले कई वर्षों में विद्रोहियों द्वारा सिलहट–मेघालय मार्ग का हथियारों के लिए अधिक बार उपयोग किया गया है।[17] मेइतेई, नागा, कुकी, जोमी, हमार और मुस्लिम यूजी समूहों की गतिविधियों के कारण विद्रोह से प्रभावित मणिपुर राज्य में वर्ष 2018 में हुई हिंसा की कुल घटनाओं (समग्र पूर्वोत्तर : 252, मणिपुर : 127) में

लगभग 50 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ मणिपुर सबसे हिंसक राज्य रहा। तथापि, वर्ष 2018 के दौरान राज्य में विद्रोह संबंधी घटनाओं में 24 प्रतिशत की कमी हुई और हताहत हुए आम नागरिकों की संख्या वर्ष 2017 में 23 से घटकर वर्ष 2018 में 08 थी। सुरक्षा बलों द्वारा विद्रोह रोधी अभियानों में वर्ष 2018 में 10 विद्रोही मारे, 404 विद्रोही गिरफ्तार तथा 99 हथियार बरामद किए गए। वर्ष 2018 में राज्य में कुल विद्रोही घटनाओं में मेईतेई विद्रोह की हिस्सेदारी लगभग 57 प्रतिशत रही, जिसमें 06 सुरक्षा बल कार्मिक एवं 05 आम नागरिक मारे गए।[18]

अग्रलिखित तालिका द्वारा हम मणिपुर में वर्ष 2015 से वर्ष 2019 तक छोटे हथियारों से जनित जनहानि को निम्न रूप से समझ सकते हैं–[19]

Year	Incidents of Killing	Civilians	Security Forces	Terrorists/ Insurgents /Extremists	Not Specified
2015	52	18	24	52	3
2016	25	14	13	9	0
2017	37	23	9	22	1
2018	21	7	7	9	0
2019	7	4	0	5	0

हांलाकि इस सब के बाद भी सशस्त्र बलों की चुनौतियां कम नहीं हैं। नई दिल्ली स्थित जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में दक्षिण–पूर्व एशियाई अध्ययन के दौरान, बिनालक्ष्मी नेप्राम ने अपने शोध के दौरान पाया कि 57 विभिन्न प्रकार के अवैध छोटे हथियारों की चीन, पाकिस्तान, बेल्जियम, अफगानिस्तान, अमेरिका, रूस, म्यांमार से उत्तर–पूर्व में उपलब्धता थी।[20]

उग्रवाद एवं छोटे हथियारों को रोकने में सशस्त्र बलों की चुनौतियां

मेजर जनरल वी के मिश्रा' के अनुसार राज्य को प्रभावित करने वाली समस्याओं को चार हिस्सों में बांट सकते हैं। उग्रवाद, जातीय मुद्दे, आपराधिक गतिविधियां और नशीले पदार्थ की समस्या।' उन्होंने कहा कि सेना और असम राइफल्स सहित अन्य सुरक्षा बल राज्य से उग्रवाद की समस्या को समाप्त करने के लिए पूर्ण प्रयास कर रहे हैं।[21] 04 नवम्बर 2018 को नवभारत टाइम्स में प्रकाशित आलेख शीर्षक मणिपुर के प्रहरीः देखिए, उग्रवादियों से कैसे निपटते हैं हमारे जवान में बताया है कि मणिपुर में सेना के जवानों को दो तरह की चुनौति का सामना करना पड़ता है। जिसमें प्रथम– नियंत्रण रेखा (LOC) पर पैट्रोलिंग कर रहे सैनिकों को अपने क्षेत्र विदित हो जाता है कि कोई संदिग्ध हलचल हुई है। जिस रास्ते से सैनिक पैट्रोलिंग करते हैं, वहां अगर कोई और गुजरता है तो उन्हें इसका अंदाजा लग जाता है। लेकिन मणिपुर में उग्रवाद से निपट रहे सैनिकों को इसका अंदाजा भी नहीं लग पाता। जिन रास्तों से सुरक्षा बल पैट्रोलिंग करते है, उन रास्तों को आम लोग भी इस्तेमाल करते हैं और उग्रवादी भी। ऐसे में वे संदिग्ध हरकतों को आसानी से पकड़ नहीं पाते। रात के समय पैट्रोलिंग के दौरान अंधेरे में कोई उनके सामने से गुजरे भी तो यह पता नहीं चलता कि वह आम आदमी है या उग्रवादी। ऐसे में खतरा कई गुना बढ़ जाता है। कदम–कदम पर आई0ई0डी ब्लास्ट का डर रहता है। लगभग 22 हजार वर्ग किलोमीटर एरिया वाले मणिपुर में महज 1843 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र घाटी है, बाकी 20484 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पहाड़ी है। किसी इलाके में उग्रवादियों का कैंप होने या उनके छुपे होने की सूचना पर उनकी निगरानी करने और जानकारी पुख्ता करने के लिए जवान अत्यधिक परिश्रम करते हैं। वे जमीन में गड्ढा बनाकर छिप जाते हैं। यह काम स्नाइपर (दूर से सटीक निशाना लगाने वाले) करते हैं। द्वितीय चुनौति है, मणिपुर की लोकटक झील जो कि नॉर्थ ईस्ट की ताजे पानी की सबसे बड़ी झील है। करीब 280 वर्ग किलोमीटर में फैली यह झील अपनी फुंमदी के लिए प्रसिद्ध है। फुंमदी का अर्थ है घास के बने टापू जो झील में बहते रहते हैं। झील के अंदर टापुओं पर कई गांव बसे हैं। अभी भी एक गांव ऐसा है जो सड़क से जुड़ा नहीं है। करांग नाम का यह टापू कभी उग्रवादी समूह पीएलए का हेडक्वॉर्टर हुआ करता था। झील के अंदर बसे गांव के साथ ही कई तैरते घर भी सुरक्षा बलों के लिए चुनौती हैं। करांग टापू में करीब 2500 लोग रहते हैं। खुफिया जानकारी के मुताबिक, यहां अब भी उग्रवादी सक्रिय हैं। करीब 04 महीने पहले ही झील के एक टापू से सुरक्षा बलों ने कई हथियार बरामद किए थे।[22] मणिपुर में सशस्त्र बलों एवं नागरिक पुलिस द्वारा अभिग्रहित छोटे हथियारों से सम्बन्धित कुछ प्रमुख घटनाओं का विवरण निम्नवत् है–

1. असम राइफल्स द्वारा भारी मात्रा में हथियार और गोला–बारूद बरामद किया गया, जो उखरुल से इम्फाल के एक वाहन में ले जाया जा रहा था। अभिग्रहित किए गए सामानों में चार पत्रिकाओं के साथ दो जीएसजी–5 जर्मन राइफलें, तीन पत्रिकाओं के साथ एक उज़कोन अर्ध–स्वचालित शॉट गन, चार पत्रिकाओं के साथ दो 9 मिमी बेरेटा पिस्तौल, दो पत्रिकाओं के साथ एक 9 मिमी सिगसौर पिस्तौल, डेटोनेटर और 6000 से अधिक राउंड विभिन्न प्रकार के गोला बारूद शामिल था। यह जब्ती असम राइफल्स की ओर से भूमिगत समूहों के नापाक मंसूबों को विफल करने के लिए एक बड़ी सफलता थी।[23]
2. मणिपुर पुलिस एवं असम राइफल्स के जवानों ने कांगपोकपी जिले के एक घर से भारी मात्रा में हथियार और गोला–बारूद बरामद किया और उसके मालिक को गिरफ्तार किया।पुलिस ने कहा कि दो एके–47 राइफलें, एक एमए–3 एसॉल्ट राइफल, एक पिस्तौल, सात मैगजीन, 215 लाइव राउंड और तीन छर्रे वाले पाउच घर से अभिग्रहित किए गये।यह संदेह था कि अभिग्रहित हथियार और गोला–बारूद उग्रवादी संगठन यूनाइटेड सोशलिस्ट रिवोल्यूशनरी आर्मी के थे।[24]
3. मणिपुर के तमेंगलोंग जिले में तैनात 37 असम राइफल्स के सशस्त्र कर्मियों ने एक कार से कुछ अत्याधुनिक हथियार और अन्य सैन्य उपकरण अभिग्रहित किए। कार एक पहाड़ी सड़क के किनारे

आ गई, जब जिले के रायकिलोंग गांव में कार्मिक तलाशी अभियान चला रहे थे। जब्त की गई वस्तुओं में एक एके–47 राइफल, एके राइफल के 30 राउंड, एक पत्रिका, 7.62 मिमी की एक गोली, और दो रेडियो सेट थे। [25]

4. मणिपुर पुलिस ने कंगपोकपी जिले में एक मकान से हथियारों और गोला बारद का जखीरा अभिग्रहित किया और मकान मालिक को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने कहा कि हीरोक्लेन इलाके में स्थित मकान से दो एके 47 राइफल, 01 एमए–3 असॉल्ट राइफल, एक पिस्तौल, सात मैगजीन, 215 कारतूस और हथियारों को छिपाने वाले तीन बैग अभिग्रहित किए गये। पुलिस और असम राइफल के जवानों के संयुक्त रूप से चलाए अभियान में जब्त किए गए हथियार और गोला बारूद नए उग्रवादी संगठन यूनाइटेड सोशलिस्ट रेवोल्यूशनरी आर्मी से सम्बन्धित थे।[26]
5. एक अन्य अभिग्रहित किए गए सामानों में चार पत्रिकाओं के साथ दो जी0एस0जी–5 जर्मन राइफलें, तीन पत्रिकाओं के साथ एक उज़कोन अर्ध–स्वचालित शॉट गन, चार पत्रिकाओं के साथ दो 9 मिमी बेरेटा पिस्तौल, दो पत्रिकाओं के साथ एक 9 मिमी सिगसौअर पिस्तौल, डेटोनेटर और 6000 से अधिक राउंड व विभिन्न प्रकार के गोला बारूद शामिल थे।[27]
6. हथियारों के संबंध में कई विश्वसनीय इनपुट के आधार पर करौंगथेल के पास एक संयुक्त तलाशी अभियान चलाया गया था। अभिग्रहित हथियारों में एक एसएलआर, तीन एक्शन राइफल, 3 32mm पिस्तौल, कम से कम 3,910 राउंड असेंबल गोला बारूद और एक येसु रेडियो सेट शामिल था।[28]
7. पूर्वी मणिपुर में इम्फाल पश्चिम जिले के कादम्पोकपी खुन्नौ के पास 4 अगस्त 2020 को 22mm पिस्तौल, 32mm पिस्तौल, 12 बोर राइफल, गोला–बारूद, चीनी हैंड ग्रेनेड और रेडियो सेट सहित हथियारों का एक कैश को अभिग्रहित किया गया था।[29]

नागालैंड पोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, मणिपुर के उखरुल शहर (जिला) के लुंगुइरा तांग में एक अवैध बंदूक बनाने के कारखाने का भंडाफोड़ हुआ।इस कारखाने के नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नागालैंड–इसाक–मुइवा (NSCN-IM) ऑपरेटिव लाइट्सन उर्फ वाइटसन द्वारा संचालित होने का संदेह है, जो कथित रूप से तस्करी और जबरन छुडौती से संबंधित गतिविधियों में शामिल है। अवैध कारखाने से 9 mm की एक पिस्तौल, .22 राइफल और कुछ गोला बारूद के साथ–साथ स्थानीय छोटे हथियार बनाने के औजार और पुर्जों को बरामद किया गया।[30]

हांलाकि गृह मंत्रालय द्वारा भ्रमित युवाओं और उग्रवादियों को, जो उग्रवाद में भटक गए हैं और बाद में उसमें फंसा हुआ पा रहे हैं, उससे छुटकारा दिलाने के लिए दिनांक 01.01.1998 से पूर्वोत्तर में उग्रवादियों के आत्मसमर्पण, सहपुनर्वास संबंधी योजना को कार्यान्वित किया जा रहा है। इस योजना में यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि आत्मसमर्पण करने वाले उग्रवादी दोबारा उग्रवाद में शामिल होने के लिए आकृष्ट न हों। ऐसी योजनाओं में प्रायः प्रत्येक आत्मसमर्पण करने वाले को 4 लाख रूपए का तत्काल अनुदान, जिसे 3 वर्षों की अवधि के लिए सावधि जमा के रूप में आत्मसमर्पण करने वालों के नाम से बैंक में रखा जाएगा। तीन वर्ष की अवधि के लिए प्रत्येक आत्मसमर्पण करने वालों को प्रतिमाह 6,000 रुपये वजीफे का भुगतान। उग्रवादियों द्वारा शस्त्रसमर्पण किए गए हथियारों/गोलाबारूद के लिए वित्तीय प्रोत्साहन। आत्मसमर्पण करने वालों को स्वरोजगार के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण आदि योजनाएं चलाई गयी हैं।[31]

अध्ययन का उद्देश्य

'मणिपुर में उग्रवाद एवं छोटे हथियारों का प्रसार' शोध पत्र के माध्यम से शोधार्थी का उद्देश्य मणिपुर में व्याप्त उग्रवाद की परिस्थितियों को उजागर करना है। मणिपुर में अवैध घुसपैठ, जातीय मुद्दे, आपसी विवाद आदि कारकों ने उग्रवाद को बढ़ाने में मुख्य भूमिका निभाई है। उग्रवाद के कारण ही मणिपुर में अनेकों उग्रवादी/आतंकवादी संगठन बने जिससे छोटे हथियारों का प्रसार संभव हुआ, जिसके फलस्वरूप वहां जनहानि हुई। उग्रवाद की रोकथाम में सुरक्षा बलों को होने वाली कठिनाईयों को भी इंगित किया गया है। चूँकि मणिपुर राज्य अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से लगा हुआ है जिससे इस राज्य का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है। इस शोध पत्र के लिए शोधार्थी द्वारा नवीनतम सन्दर्भ के रूप में समाचार पत्रों व शोध पत्र संबंधी वेबसाइटों से अध्ययन किया गया।

निष्कर्ष

मणिपुर में उग्रवाद एवं छोटे हथियारों के प्रसार को रोकने के लिए वहॉ आदिवासी नगा–कूकी तथा मैती के बीच पुराने विवादों को समाप्त किया जाना चाहिए। क्योंकि हथियारों से किसी भी समस्या का समाधान नहीं हो सकता है। बंदूक की जगह वार्ता से ही समझाकर हिंसक गतिविधियों में संलिप्त लोगों को मुख्यधारा में वापस लाना होगा। इस क्षेत्र में आई0एस0आई की समस्त गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए खुफिया तंत्र को और अधिक विकसित करना होगा।जिसके लिए सुरक्षा बलों और नागरिक पुलिस को बदलती नवीन प्रौद्योगिकी के साथ प्रशिक्षित करना चाहिए। मणिपुर में उन जगहों को चिन्हित करना चाहिए जहॉ पर अवैध गतिविधियॉ होती रहती हैं, एसे स्थानों पर खुफिया विभाग को अधिक निगरानी रखनी चाहिए। मणिपुर राज्य की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर गहन पैट्रोलिंग की आवश्यकता है, जिससे अवैध छोटे हथियार संबंधी खरीद फरोख्त एवं प्रसार को रोका जा सके। खुफिया तंत्र की मदद से अवैध बंदूक बनाने की फैक्ट्रीयों को गहनता से खोजकर समूल नष्ट कर देना चाहिए। मणिपुर में विकास सम्बंधी कार्यो की वरीयता को क्रमबद्ध करना चाहिए साथ ही साथ उक्त कार्यों हेतु बजट को बढाया जाना चाहिए। मणिपुर के उग्रवादी संगठनों पर अंकुश लगाना इसलिए मुश्किल हो जाता है, क्योंकि वह पड़ोसी राष्ट्रों विशेषकर भूटान, बांग्लादेश, म्यांमार और चीन में शरण ले लेते हैं। प्राकृतिक सीमाओं का पूर्ण लाभ उग्रवादी संगठनों को प्राप्त हो जाता है। ऐसे में आवश्यकता है कि इन राष्ट्रों के सकारात्मक रूख का हर संभव लाभ उठाया जाना चाहिए और इन उग्रवादी

गुटों के विरूद्ध दीर्घकालिक कार्यवाही की जानी चाहिए। भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न करने वाले हर समूह/संगठन से न केवल सख्ती से पेश आए बल्कि भारतीय हितों को नुकसान पहुंचाने की रणनीति पर चलने वाले देशों को यह संदेश भी दे कि उनकी गतिविधियां इस क्षेत्र की शांति के लिए ठीक नहीं हैं। मणिपुर में रहने वाले सभी लोगों को आपसी प्रतिद्वंदिता को भुलाकर मणिपुरी होने की भावना विकसित करनी होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *https://hindi.mapsofindia.com/manipur/*
2. *मनोरमा ईयर बुक 2020, पृ0सं0 512*
3. *http://manipuronline.com/features/armed-conflict-and-small-arms-proliferation-in-india%E2%80%99s-north-east/2011/02/08*
4. *सिन्हा, डॉ0 अजय कुमार, राष्ट्रीय सुरक्षा की परम्परागत एवं अपरम्परागत समस्याऍं (2012) पृ0सं0 147*
5. *सिंह, प्रो0 लल्लन जी, राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा (2017), पृ0 सं0 421*
6. *सिन्हा, डॉ0 अजय कुमार, राष्ट्रीय सुरक्षा की परम्परागत एवं अपरम्परागत समस्याऍं (2012) पृ0 सं0 148*
7. *मिश्र, सुरेंद्र कुमार, बांग्लादेशी घुसपैठ व भारतीय सुरक्षा(2007) पृ0 सं0 73*
8. *तदैव पृ0 सं0 138*
9. *समकालीन समस्याएं एवं विश्लेषण, नवम्बर 2015 पृ0 सं0 62*
10. *सिंह, डॉ0 आर0बी0, भारत में आतंकवाद (2010), पृ0सं0 181*
11. *Times of India, 30 July 2020*
12. *सिंह, डॉ0 आर0बी0, भारत में आतंकवाद (2010), पृ0सं0 182*
13. *समकालीन समस्याएं एवं विश्लेषण, अगस्त 2015 पृ0 सं0 24*
14. *http://www.indiandefencereview.com/spotlights/northeast-the-role-of-narcotics-and-arms-trafficking/2/*
15. *https://morungexpress.com/gun-survivors-says-manipur-will-be-land-widows*
16. *https://www.haribhoomi.com/news/surgical-strike-on-myanmar-army-crosses-border-thrice-to-target-militants-in-past*
17. *Bhaumik Subir, Troubled Periphery Crisis of India's North East(2009), Pg.no-185-186*
18. *वार्षिक रिर्पोट 2018–19, गृहमंत्रालय, भारत सरकार, पृ0 सं0 22–23*
19. *https://www.satp.org/datasheet-terrorist-attack/fatalities/india-insurgencynortheast-manipur*
20. *https://www.livemint.com/Leisure/ttEimLqz4IXZCFhNr5kMiI/Binalakshmi-Nepram--Imagine-theres-no-gun.html*
21. *https://navbharattimes.indiatimes.com/state/other-states/other-cities/there-is-no-easy-way-to-tackle-extremism-in-manipur-says-top-army-official/articleshow/66497673.cms*
22. *https://navbharattimes.indiatimes.com/india/here-is-how-our-military-men-deal-with-militants-in-manipur/articleshow/66494980.cms*
23. *https://economictimes.indiatimes.com/news/politics-and-nation/a-huge-cache-of-arms-and-ammunition-recovered-in-manipur/articleshow/64269436.cms*
24. *https://economictimes.indiatimes.com/news/defence/arms-ammunition-recovered-in-manipur/articleshow/58405965.cms*
25. *https://www.thehindu.com/news/national/other-states/sophisticated-weapons-military-equipment-seized-in-manipur/article30802337.ece*
26. *आउटलुक, मणिपुर में एक मकान से हथियार और गोला बारद का जखीरा बरामद, 27 अप्रैल 2017*
27. *https://economictimes.indiatimes.com/news/politics-and-nation/a-huge-cache-of-arms-and-ammunition-recovered-in-manipur/articleshow/64269436.cms*
28. *https://www.eastmojo.com/manipur/2020/06/12/manipur-huge-cache-of-ammunition-drugs-recovered*
29. *https://satp.org/terrorism-update/arms-and-ammunition-recovered-in-manipur*
30. *https://www.satp.org/terrorism-update/illegal-gun-making-factory-busted-in-manipur*
31. *वार्षिक रिर्पोट 2018–19, गृहमंत्रालय, भारत सरकार, पृ0 सं0 25–26*